

आधुनिक हिंदी व्यंग्य निबंधों में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना

आज के परभाव अन्धधु, अज्ञान और भ्रष्टाचार की रस्नार बहुत तेज हो गयी है। जनता में जब तक पुराने श्रद्धा-भावों को जानकारी पहुँचे, तब तक नया बाटला सामने आ जाता है। आधुनिक युग की धरि के साहित्यकारों ने व्यंग्य के समस्त उपकरणों का प्रयोग करके इस पर प्रचुर मात्रा में व्यंग्य किया है।

आज व्यंग्य प्रिया उमेश से हटकर सभी विधाओं में समताज प्रिया बनी है। किंतु, आज भी इसके सांस्कृतिक पक्ष को लेकर गर्भर बहस नहीं हुई है। मूल्यांकन की दृष्टि से व्यंग्य साहित्य उपाक्षित रहा है। "आधुनिक हिंदी व्यंग्य निबंधों में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना" यह ग्रन्थ इस न्यूनता की पूर्ति की विनम्र कोशिश है।

• व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति • अर्थ एवं पर्यायवाची शब्द • मान्यताएँ • भारतीय और पाश्चात्य दृष्टि से • तत्व और विशेषताएँ • व्यंग्य परम्परा • आदिकाल • भक्तिकाल • रीतिकाल एवं आधुनिक कालीन विधाओं में व्यंग्य परम्परा तथा पाश्चात्य, वैदिक एवं संस्कृत परम्परा • हिंदी के प्रमुख व्यंग्यकार-उनकी रचनाओं की विशेषताएँ • सांस्कृतिक चेतना • सामाजिक चेतना • राजनीतिक चेतना • उपसंहार ।



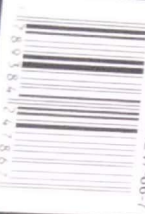
डॉ. बलजीराम राख - एम. ए. (हिंदी) पी-एच.डी। वर्तमान में पद्मभूषण वसंतदादा पाटील, कोलोन, पाटोव, शोध-निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष, स्नातक-स्नातकोत्तर विभाग, अख्यत हिंदी भाषा एवं साहित्य अनुसंधान केंद्र।

Chandralok Prakashan

110, Bhamburda Road, Market Area, Hazratganj, Kanpur-20
Tel: 0512-264444, 264445, 264446, 264447, 264448, 264449
Fax: 0512-264450, 264451, 264452, 264453, 264454
E-mail: chandralok@chandralok.com, chandralok@yahoo.com
Website: www.chandralok.com, www.chandralok.org

₹ 900/-

ISBN 978-93-84247-86-7



आधुनिक हिंदी व्यंग्य निबंधों में सांस्कृतिक,
सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना
डॉ. बलजीराम राख

आधुनिक हिंदी व्यंग्य निबंधों
में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा
राजनीतिक चेतना

डॉ. बलजीराम राख